IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पटना शहरी क्षेत्र के स्कूल एवं कॉलेज की लड़कियों में तंबाकू उपयोग :एक अध्ययन

डॉ. रीमा कुमारी
एम. ए., बी.एड., पीएचडी,
प्रोजेक्ट बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय,
जगदीशपुर भागलपुर बिहार।

उद्देश्य:--

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य बिहार की राजधानी पटना के शहरी क्षेत्र के स्कूल एवं कॉलेजों की लड़कियों में तंबाकू सेवन का पता लगाना है यह दिग्दर्शन करना है।

परिचय:--

तंबाकू एक ऐसा पदार्थ है जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हुए भी मानव समाज में पूरी तरह व्याप्त है। इसके उपयोग के विभिन्न रूप देखने को मिलते हैं। इस मादक पदार्थों को भारत में हुक्का से लेकर सिगरेट तक और खैनी से लेकर सुघनी तक मान्यता प्राप्त है।

तंबाकू सेवन से होने वाली असाधारण बीमारियों से अच्छी तरह से अवगत होते हुए भी दुनिया में 1.1 अरब से ज्यादा लोग धूम्रपान या अन्य किस्म के तंबाकू उत्पादनो का सेवन करते हैं। हर मिनट एक करोड़ पचास लाख लोग या तो सिगरेट बीड़ी हुक्का आदि सुलगा लेते हैं या तंबाकू चबाने लगते हैं।इसमें 47 प्रतिशत पुरुष और 7 प्रतिशत महिलाएं तंबाकू सेवन करती हैं, जबकि विकसित देशों में 42 प्रतिशत पुरुष और 24 प्रतिशत महिलाएं किसी ना किसी रूप में तंबाकू सेवन करती हैं।यह भी तब जबकि कई परीक्षणों से साबित हो चुका है कि कैंसर, श्वासनली ,हृदय एवं मस्तिष्क संबंधी 25 बीमारियां ऐसी हैं जो तंबाकू सेवन से होती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा हाल ही में जारी एक रिपोर्ट के मुताबिक तंबाकू सेवन से होने वाली बीमारियों के कारण प्रतिवर्ष 35 लाख लोगों की मृत्यु होती है, जिसमें 10 लाख लोग विकासशील देशों के होते हैं।

तंबाकू उत्पादों के लगातार सेवन से एक तरफ जहां लोग जान गंवा रहे हैं वहीं दूसरी तरफ इसके धुँआ झेलने से भी हजारों लोगों को मौत के मुंह में जाना पड़ता है। इस संबंध में आंकड़े बताते हैं कि 60 हजार लोग प्रतिवर्ष सिर्फ धुँआ झेल कर मर जाते हैं। अमेरिका जैसे देश में प्रति सप्ताह धुँआ झेलकर मरने वालों की संख्या 150 है। रिपोर्ट में यह चेतावनी दी गई है कि अगर इसी तरह का वातावरण रहा तो 2020 इसवी तक तंबाकू जनित रोग मृत्यु और सामाजिक विकलांगता के प्रमुख कारण बनेंगे । उस समय तंबाकू जनित रोगों से प्रतिवर्ष मरने वालों की संख्या एक करोड़ तक पहुंच जाएगी । यानी तब एड्स कैंसर टी० बी०, सड़क दुर्घटनाओं, प्रसव जनित मृत्यु और आत्महत्याओं की घटनाओं से होने वाली मृत्यु से ज्यादा मृत्यु तंबाकू जनित रोगों के कारण होगी।

भारत में तंबाकू का प्रयोग 16वीं- 17वीं शताब्दी में मुगलों एवं राजपूतों के शासनकाल से प्रारंभ हुआ था। भारत में खाने के रूप में तंबाकू का प्रयोग सदियों से हो रहा है।पहले यह आदत जनसंख्या की मामूली प्रतिशत तक ही सीमित थी लेकिन अब संस्कृति के बदले प्रभाव के कारण नौजवानों में इस की ललक बढ़ने लगी। धीरे-धीरे बच्चे और महिलाएं भी इस अंधी दौड़ में शामिल होती चली गई ।भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद की ताजा अध्ययन से यह बात उभरती है कि देश के 30 प्रतिशत

छात्र ,10प्रतिशत महिलाएं और 52प्रतिशत पुरुष किसी न किसी प्रकार तंबाकू का सेवन करते हैं ।भारत में 70 प्रतिशत धूम्रपान करने वाले लोग बीड़ी पीते हैं जबकि दो करोड़ से ज्यादा लोग पान मसाला या गुटखा का व्यवहार करते हैं।

अध्ययन पद्धति :--

वर्तमान युग सामाजिक समस्याओं की जटिलताएं दिन-प्रतिदिन सामाजिक वैज्ञानिक के समक्ष नई -नई चुनौतियां प्रस्तुत कर रही है। मानव सभ्यता के क्रमिक हास-- विकास विभिन्न क्षितिजो मेआया है। सामाजिक जीवन एवं सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया के सम्यक ज्ञान के लिए मानव समाज के समक्ष विभिन्न सामाजिक समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।प्रस्तुत शोध कार्य में "पटना शहरी क्षेत्र के स्कूल एवं कालेजों की लड़कियो पर तंबाकू उपयोग" का पता लगाने का उपक्रम किया गया है।

वस्तुतः पूरे बिहार की स्कूल एवं कॉलेज की लड़कियों में तंबाकू उपयोग के प्रति उनके विचार एवं उससे उत्पन्न समस्याओं का व्यापक सर्वेक्षण सीमित साधन एवं समय की दृष्टि से संभव नहीं था, इसलिए प्रासंगिक शोध का परिक्षेत्र पटना शहरी क्षेत्र तक ही सीमित रखा गया है साथ ही पटना शहरी क्षेत्र के स्कूल एवं कॉलेज की लड़कियों में तंबाकू उपयोग के संरक्षण हेतु निम्नलिखित ! --:पद्धतियों को प्रस्तुत किया गया है

* नमूना
* आंकड़ा संग्रह का उपकरण

नमूना-- सुविधा के लिए पटना को चार भागों में विभाजित कर चारों भाग से एक एक स्कूल कॉलेज का चयन किया गया। -8वीं से 12वीं कक्षा की 11 वर्ष से 17 वर्ष तक के 500 छात्राओं के बीच सर्वेक्षण किया गया।

आंकड़ा संग्रह का उपकरण इस सर्वेक्षण के लिए--60 प्रश्नों की प्रश्नावली तैयार कर अध्यापिका को अनुपस्थित रहने का अनुरोध कर 45 मिनट समय देकर इसे भरवा कर एकत्र किया गया ।वैकल्पिक उत्तर वाले प्रश्नावली को ए० एन० सिन्हा सामाजिक संस्थान पटना के सांख्यिकी विभाग की सहायता से साधारण तालिका, क्रास तालिका बनाकर विश्लेषण किया गया है।

विश्लेषण सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ है कि --70प्रतिशत छात्राएं किसी न किसी रूप में तंबाकू का सेवन करती हैं। तंबाकू के विभिन्न प्रकार यथा बीड़ी -, सिगरेट, खैनी, पान जर्दा-, पान मसाला ,गुटखा ,लाल दंत मंजन, गुड़ाखू आदि के सेवन पर सर्वेक्षण किया गया। जिन स्कूल एवं कॉलेज में सर्वेक्षण किया गया, वहां हर वर्ग गरीब मध्यम उच्च और हर धर्म की छात्राएं पढ़ती है। अतः इससे पता चलता है कि समाज की हर वर्ग की छात्राओं को तंबाकू सेवन की लत लग चुकी है।छात्राओं में 43. 6 प्रतिशत मुंह की सफाई के लिए विभिन्न प्रकार के तंबाकू का प्रयोग जाने अनजाने में करती है। मुंह की सफाई के लिए प्रयोग में आने वाली लाल मंजन, इफको डेटोबैक/, टूथपेस्ट, गुल व गुड़ाकु में भी तंबाकू होता है।22.2प्रतिशत छात्राएं तंबाकू युक्त टूथपेस्ट ,14.4प्रतिशत छात्राएं लाल दंत मंजन, 6.6 प्रतिशत छात्राएं गुल एवं 0.2प्रतिशत छात्राएं गुड़ाकु का प्रयोग करती हैगुल और गुड़ाखू प्रयोग ! में लाने वाली छात्राएं जानते हुए थकावट दूर करने एवं नशा के लिए इसका उपयोग करती है, जबकि लाल मंजन व तंबाकू युक्त टूथपेस्ट उपयोग में लाने वाली छात्राएं अनजाने में इसका प्रयोग करती है। लाल दंत मंजन व टूथपेस्ट का तंबाकू युक्त होना बहुत ही गलत प्रक्रिया है क्योंकि इसका सेवन बहुत ही कम उम्र में लड़कियां दांत साफ करने में करती है।छात्राओं को यह भी पता नहीं होता कि तंबाकू का सेवन वह इस रूप में कर रही है। दांत साफ करना प्रतिदिन की प्रक्रिया होती है ,इस रूप में छात्राओं का नुकसान होना निश्चित है। अगर कोई छात्राएं मुंह की सफाई छोड़कर अन्य रूप में तंबाकू का सेवन करती तो इसका प्रतिशत इतना अधिक नहीं होगा।

मुंह की सफाई के रूप में तंबाकू सेवन करने के अलावा तंबाकू सबसे अधिक गुटका ,पान मसाला के रूप में छात्राएं सेवन करने लगी हैं ।30. 2 प्रतिशत छात्राएं तंबाकू का सेवन विभिन्न प्रकार के गुटका के रूप में करने लगी हैचूँकि !, यह आज प्रतिबंध के बावजूद हर गांव व शहर में आकर्षक पाउच में आसानी से कम मूल्य पर उपलब्ध है। इस लिए इसके सेवन में छात्राओं को कोई परेशानी नहीं होती 28.20 प्रतिशत छात्राएं इसके लिए प्रतिदिन 2 से 4 रुपए जबकि 3 प्रतिशत छात्राएं 4 रुपएसे अधिक खर्च करती है 17 .8 प्रतिशत छात्राएं घर पर 6 प्रतिशत छात्राएं स्कूल कॉलेज में जबकि 4.30 प्रतिशत छात्राएं अन्य स्थानों पर तंबाकूगुटका का सेवन करती है /

सर्वेक्षण से पता चलता है कि 5. 2 प्रतिशत छात्राएं धूम्रपान के रूप में तंबाकू का सेवन करती है इसमें !4. 8 प्रतिशत छात्राएं सिगरेट के रूप में एवं 0.4 प्रतिशत छात्राएं अन्य रूप में धूम्रपान करती है।

आरम्भिक तौर पर नशीले पदार्थ का सेवन कोई छात्रा केवल स्वाद के लिए करती है। फिर यह आदत में बदल जाती है, जो छात्रा नशा का सेवन नहीं करती उसके सामने नशा की आदि छात्रा नशे को बढ़ा चढ़ाकर गुणगान करती हैयह कि नशा करने ! से स्वर्गीय आनंद मिलता है यौन शक्ति बढ़ती है, व्यक्ति कुछ समय के लिए परमानंद की दुनिया में पहुंच जाता है। इसके परिणाम स्वरूप नशा न करने वाली छात्राएं भी इसकी ललक की शिकार हो अभ्यस्त हो जाती है।

छात्राओं में बढ़ रही नशाखोरी की प्रवृत्ति के लिए स्कूल कॉलेज का वातावरण भी उत्तरदायी है । आज से पचास वर्ष पहले स्कूल कॉलेज शिक्षा के मंदिर हुआ करते थे, पर अब नशाखोरी के छोटेछोटे अड्डे बन गए हैं। कई परिवार के मुखिया स्वयं नशा - का सेवन करते हैं, वह भी इसके काफी हद तक जिम्मेदार हैं। गम को भुलाने,परीक्षा ,प्रेम प्रसंग ,नौकरी में असफलता के बाद भी कई छात्राओं को नशा की अभ्यस्त देखा गया है। अपनी हीन भावना असफलता को छिपाने के लिए नशा का सेवन स्थाई हल नहीं बल्कि कायरता है ।जीवन में अनेक गंभीर समस्याएं आते हैं पर उन समस्याओं का धैर्य पूर्वक ठंडे मन से सामना करना चाहिए।

निष्कर्ष -:

आजकल तंबाकू सेवन करने वाली छात्राओं की संख्या में तेजी से वृद्धि होती जा रही है। यदि यथाशीघ्र तंबाकू युक्त नशीले पदार्थों की इस बढ़ती हुई महामारी पर नियंत्रण नहीं पाया गया तो यह हमारी युवा पीढ़ी को पूरी तरह बर्बाद कर देगी।

इसमें कोई दो राय नहीं कि आदमी जिस वस्तु का व्यसनी हो जाता है उससे मुश्किल से ही छुटकारा पा सकता है। इच्छाशक्ति और आत्मविश्वास विकसित कर ही इस व्यसन से धीरे धीरे छुटकारा पाया जा सकता है।

यह एक विचारणीय तथ्य है कि दुनिया के समझदार लोग स्वास्थ्य की रक्षा के लिए पैसा खर्च करते हैं जबकि धूम्रपान करने वाला अपना कलेजा जलाने के लिए। तंबाकू सेवन की तकलीफ ढलती उम्र में ज्यादा बढ़ जाती है जब यह लाइलाज हो जाता है। सिर दर्द, अनिद्रा, फूलती सांस , जर्जर शरीर ऊपर से वृद्धावस्था। अतः समय रहते ही सचेत हो जाना ज्यादा बेहतर है। असली आवश्यकता है सही स्वास्थ्य शिक्षा देने की। समाज ऐसी संस्थाओं और समाज के विभिन्न लोगों को स्वास्थ्य शिक्षा देने एवं धूम्रपान के कुप्रभावों की जानकारी देने की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए।

नशा के बारे में प्रचलित भ्रांतियों को भी दूर किए जाने की आवश्यकता है। युवा पीढ़ी को पता चलना चाहिए कि तंबाकू सेवन व धूम्रपान से कोई ना तो मॉडल स्मार्ट बन सकता है और ना ही इसके सेवन से अद्भुत आनंद की प्राप्ति और शारीरिक मानसिक कार्य क्षमता में वृद्धि होती है। मनोवैज्ञानिक इस बात से कतई सहमत नहीं है कि सिगरेट या तंबाकू सेवन से तन्मयता एवं एकाग्रता बढ़ती है।वे यह भी स्वीकार नहीं करते कि इसके सेवन से रचनात्मक प्रवृत्ति अथवा शक्ति को प्रोत्साहन प्राप्त होता है।

स्कूल कॉलेजों में छात्राओं की सृजनात्मक शक्ति के विकास को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, ताकि वे व्यस्त रहें और खालीपन व अकेलापन का एहसास ना हो। विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों और विद्यालयों में तंबाकू सेवन की समस्या पर नियमित रूप से गोष्ठियों, सभाओं और सम्मेलनों का आयोजन किया जाना चाहिए। सामाजिक संस्थाओं को चाहिए कि वह मात्र सेमिनार तक ही सीमित ना रहे वरन इसके विरोध में व्यापक कार्य करें। आज जरूरत है इन संस्थाओं को नशा के विरुद्ध जन जागृति करना, नशा से मुक्ति के लिए नशा मुक्ति शिविरों का आयोजन करना।

महिला नेत्री को चाहिए कि वे FCTC (the Frame work Convention On Tabacco Control) के बढ़ावा हेतु सक्रिय रूप से भाग ले और प्रत्येक राज्य से इसकी मसविदा तैयार करने हेतु बातचीत करें। WHO का संयुक्त कार्यक्रम जो यूरोपीय देशों के साथ चलाया जाता है यह दुनिया के दूसरे क्षेत्रों में भी दिखाई पड़ना चाहिए, विशेषकर एशिया और प्रशांत क्षेत्र में।-- FCTC और WHO का लेख UN के द्वारा कार्य करने की भाषा में रूपांतरित होना चाहिए। महिलाओं और नौजवानों को ऐसी सभी अंतरराष्ट्रीय राष्ट्रीय संस्थानों में समान रूप से भागीदारी होनी चाहिए जो तंबाकू निषेध के क्षेत्र में कार्य कर रही है।

धूम्रपान के घातक परिणाम में सुधार करना सरकार का महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व है। किसी भी सरकार के हाथ में सबसे बड़ा हथियार संभवत कराधान है जिसके अंतर्गत सरकार तंबाकू की कीमत चाहे कितनी भी निर्धारित कर सकती है। तंबाकू सेवन नहीं करने वालों को अधिकाधिक सुविधाएं प्रदान करने के साथ साथ तंबाकू सेवन करने वालों को हतोत्साहित करने के लिए सुविधाएं छीन लेना व सेवा से निकाल देने का भी कार्य सरकार कर सकती है। इसके लिए और भी बड़े कानून सरकार चाहे तो बना सकती है। इसी सभी सम्मिलित प्रयासों से समाज में गंभीर रूप से व्याप्त कुरीतियों को रोका कम किया जा सकता है।

आभार----

डॉ० आशा खरे पूर्व विभागाध्यक्ष , मगध महिला कॉलेज , पटना , डॉ० धीरेंद्र नारायण सिन्हा , प्राध्यापक , (सर्जरी पटना मेडिकल कॉलेज व अस्पताल(, अनुग्रह नारायण सिन्हा सामाजिक शोध संस्थान, पटना व अन्य सभी जिसके सहयोग से यह शोध संभव हो पाया ।